क्षमा करने का साहस जुटाईए...

जीवन यात्रा में कभी अपने अंदर अशीम प्यार, आनंदमय मिठास अपनी आँखों में भरकर कभी आपने उस व्यक्ति की ओर भरपूर नजरों से देखा है, जिसने सारी जिंदगी आपका दिल दु:खाया हो! और तो यह भी बताइये जरा, उस वक्त दिल की किसी परत में उसके लिए कतरा भर भी गुस्सा तो नहीं था? अगर ऐसा कर पाए हो तो समझिए आपने जीवन का सबसे बड़ा सत्य, सर्वाधिक उपयुक्त अर्थ तलाश लिया। बहुत मुश्किल होता है किसी को क्षमा कर पाना, लेकिन इसमें खूबसूरत बात दुनिया में शायद ही कुछ और हो। आप कहेंगे - प्रेम है दुनिया का सबसे खुबसूरत एहसास। बात तो सही है, लेकिन प्रेम से कहीं कमतर नहीं है। किसी ऐसे व्यक्ति को उसके गुनाहों के लिए माफ कर देना, जिसने आपको घृणा के सिवा कुछ और दिया ही न हो।

यूं यह बात सूनने में पढ़ने-लिखने-बोलने और बताने में जितनी सुंदर और सरल लगती है, व्यवहार में उतारने में उतनी ही कठिनाई होती है। कोई हमारा दो-चार सौ रुपए भी हड़प ले और न लौटाए तो हम आग-बबूला हो जाते हैं। और यह तो असंभव सी बात है कि कोई शत्रुता करे, धोखा दे, छल-कपट के जाल बुने और हम उसे क्षमा कर दें, लेकिन ऐसा करना ही होगा, क्षमा करके हम सुंदर बनेंगे एक खुबसूरत दुनिया तैयार करने की ओर बढ़सकेंगे।

चलिए, इसी सिलसिले में कुछ और पहलुओं पर भी नजर डालते हैं। सबसे पहली बात यह है कि हम है कौन? यकीनन मनुष्य। इंसान जिसे कुदरत में सम्पूर्ण, शक्तिमान और अद्वितीय माना गया है। ग्रंथों में भी मनुष्य को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति कहा गया है। मनुष्य अलग-अलग जाति, लिंग, धर्म वर्ण यानी रूप रंग के माना विविध प्रकार के होते हैं। आर्थिक सामाजिक स्तर पर, पढ़ाई-लिखाई, सोच और व्यवहार के स्तर पर भी एक दूसरे से जुदा होते हैं लेकिन कुछ तो है, जो सभी मनुष्यों को एक तार में जोड़ना है - वह है मानवीय सोच, संवेदना और समझदारी। नहीं, बात यही खत्म नहीं होती। एक और बात है, जिससे दुनिया के किसी भी हिस्से के मनुष्य के संबंध दूसरे मनुष्य के साथ पूरी मजबूती के साथ कायम होते हैं। यह बात आस्था से ताल्लूक रखती है, यानी हम सबका स्रोत एक है - ईश्वर, जिसने मनुष्य जाति का निर्माण किया है। इस पूरी कायनात की रचना की। ऐसे में जब हम एक ही उसे जीवन पाते हैं, उसी के हाथों बुने गए हैं, वन हैं। फिर हमें एक-दूसरे से घृणा करने या शत्रुता रखने का क्या अधिकार है?

प्रश्न उठेगा यह बात तो सब पर लागू होती है, लेकिन फिर भी कुछ लोग घृणा और द्वेष मन में पाले रखते हैं। सहज रूप से प्रतिकार की भावना हमारे मन में भी पैदा हो सकती है। और यह स्वाभाविक या निंदनीय कैसे है? यही पर गौर करने लायक दूसरी बात सामने आती है - जिसने मनुष्यता के नियमों, शर्त्तों और मानकों को समझ लिया, वही तो सच्चा मनुष्य है। नहीं तो, हममें और पशुओं में अंतर ही क्या रह पायेगा?

यही कारण है कि संसार के सभी धर्म और ग्रंथ हमें क्षमा करने और माफी मांगने की सलाह देते हैं, वह भी मन में किसी तरह का अकुलाहट और कड़वाहट पाले बिना। जिंदगी के मायनें हैं भी क्या - यही न कि हम सही तरीके से खुशियां तलाशे, आस-पास के लोगों को प्रसन्न रखें और दीन-दु:खियों की सेवा करें।

जीवन को नये तर्जूमान देने की कोशिश तब कवायद बनकर रह जाती है, जब हम किसी के अपराधों को किसी विवशता में भूनाने का ढोंग करते हैं। क्षमा करने का तात्पर्य किसी मायने में कायरता नहीं है। क्षमा वही व्यक्ति कर सकता है, जो समर्थ हो और सक्षम हो। जिस व्यक्ति में मनोभावों पर नियंत्रण करने, प्राणिमात्र को ईश्वर के विस्तृत परिवार का हिस्सा मानने की क्षमता नहीं होगी। जो स्वार्थों से ऊपर उठकर सामाजिक समरसता के विकास की कामना नहीं करेगा, यह भला किसी को क्षमा कैसे करेगा? मन की गांठे खुद सुलझानी पड़ती है। इसके पीछे किसी बाह्य दबाव को स्वीकार नहीं करना चाहिए। इस तरह हम क्षमा करने का नाट्य तो मन में संचित कर सकते हैं, लेकिन वह असल मायनें में क्षमा नहीं होगी। हम कोई भी अपराध करते हैं तो तत्काल ईश्वर से अपील करते हैं - हे प्रभु, हमसे गलती हो गई, हमें क्षमा करना। माफी मांगने की यह चेतना बताती है कि हममें कहीं न कहीं मनुष्यत्व जीवन है, लेकिन इसी भावना का विस्तार है बाकियों को भी तुरंत क्षमा कर देना।

जरा सोचिए - ईश्वर ने जब यह सृष्टि बनाई तो उनका स्वप्न क्या था? यही न कि उसके बच्चे आपस में मिल-जुलकर, सुख से रहें। शांति और समरसता का विकास करें। क्या हम परमपिता की अपेक्षाओं पर खरें उतरें? यह पुनर्विचार का समय है। हमें इसके लिए उनसे ही क्षमा मांगनी चाहिए और निश्चित तौर पर क्षमायाचना का यही तरीका होगा कि हम अपने सृष्टा से वादा करें कि किसी के भी प्रति द्वेष नहीं रखेंगे।

महाभारत का एक प्रसंग है। ऋषि विश्वामित्र महर्षि व वशिष्ठ से किसी बात पर इतने क्रोधित हुए कि उसका वध करने के लिए उद्यत हो गए। वे वशिष्ठ के आश्रम में पहुंचे और एक जगह छूपकर अरूंधती-वशिष्ठ संवाद सुनने लगे। विश्वामित्र ने सुना कि वशिष्ठ उन्हीं की तपस्या के तेज की महिमा का वर्णन कर रहे हैं। विश्वामित्र ने तत्काल वशिष्ठ से अपने मनोभावों और कुत्सित इच्छा के लिए क्षमा याचना की और वशिष्ठ ने उन्हें तत्क्षण क्षमा भी कर दिया।

तपस्या में तल्लीन भगवान महावीर को अपने बैलों का चोर समझकर एक ग्वाले ने उनके कानों में कील ठोंक दी, लेकिन महावीर ने उसे महादान दिया - क्षमादान। यह उनकी आत्मा की आवाज भी कि किसी के अहित किया भी हो तो वह ईश्वर की इच्छा होगी। हमारे सृष्टा ईश्वर ने जीवन दिया है तो सब कुछ वही तय करेंगे। कब कौन-कहां हमारा हित करेगा या अहित। ईश्वर ने अपने अवतारों के क्रम में पापियों को क्षमा देकर यह संदेश बार-बार दोहराया है। श्रीकृष्ण ने शिशुपाल को 100 गलतियों की माफी दी, व वैष्णों देवी ने भैरवनाथ को वरदान दिया कि मेरी तरह आपको दर्शन करने आयेंगे। ईसामसीह ने अपने हत्यारों को क्षमा कर दिया।

जिस व्यक्ति ने क्रोध, प्रतिकार और विशाद की भावना का त्याग कर दिया, वही सही मायने में जीवन का अर्थ समझ रहा है। यही हम दूसरों को पापी समझकर बदले की दौड़ में पागल रहे तो जीवन का कोई अर्थ बाकी न रहेगा।

शिवरात्रि पर्व परमात्मा वे...

पृष्ठ 1 का शेष

किया जा सकता है। त्रिनिडाड के भारत में उच्चायुक्त चंद्रदथ सिंह ने कहा कि भारत एक महान देश है और आज इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर यह आभास हो गया कि यहां ही परमात्मा का अवतरण होता है। हम धन्य हैं जो परमात्मा के घर में आये हैं।इस कार्यक्रम में ब्र.कु.रमेश शाह, ब्र.कु.मृत्युंजय, ब्र.कु.भूपाल, ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु.मोहिनी, ब्र.कु.मुन्नी, न्यूयार्क की ब्र.कु.मोहिनी, रशिया की ब्र.कु.सुधा व ब्र.कु.संतोष, मलेशिया की ब्र.कु.मीरा, जापान की ब्र.कु.रजनी, जर्मनी की ब्र.कु.सुदेश, लंदन की ब्र.कु.जयंति, उत्तर प्रदेश के श्रमायुक्त सीताराम मीणा, ब्र.कु.करूणा सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। शिवध्वजारोहण का कार्यक्रम पाण्डव भवन, ज्ञान सोवर, शांतिवन, ग्लोबल हॉस्पीटल, पीस पार्क, संगम भवन आदि स्थानों पर भी धूमधाम से मनाया गया।

गामदेवी, मुम्बई। शिवसेना के कार्यकारी अध्यक्ष उद्धव ठाकरे को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.नेहा साथ में है ब्र.कु.दीपक।

आजमगढ़। नर्सेज ट्रेनिंग कॉलेज में आध्यात्मिक संदेश देने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं डॉ.आर.बी.त्रिपाठी, ब्र.कु.रंजना, ब्र.कु.निर्मला।

तांडूर (आंध्र प्रदेश)। 'एक परमात्मा, एक विश्व परिवार' विषय पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ब्र.कु.हरीश तथा मंचासीन हैं ब्र.कु.रत्ना, ब्र.कु.गायत्री तथा अन्य।

कटनी। 'बार ऐसोशिएशन' में ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं ब्र.कु.सवित्री, ब्र.कु.भगवती तथा अन्य।

भीलवाड़ा। 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए पूर्व नगर परिषद अध्यक्षा मधु जाजू, कानफेड की अध्यक्षा मोना शर्मा, ब्र.कु.इंद्रा एवं ब्र.कु.तारा।

कोपरगांव। ब्र.कु.सरला को सम्मानित करते हुए ज्येष्ठ नागरिक संघ व महिला समिति के सदस्य।

ब्रह्मपुर। शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित सर्वधर्म सम्मेलन शिवध्वज दिखाकर उद्घाटन करते हुए जिला अधीक्षक जे.एन.हंसाद, एस.के.तुरूक, ब्र.कु.मंजु, एवं ब्र.कु.माला।

पालघर। शिवध्वाजारोहण करने के पश्चात् शपथ दिलाती हुई ब्र.कु.हेमा तथा अन्य।